साहित्य संहिता

Available at http://www.sahityasamhita.org/

ISSN- 2454-2695
Volume 03 Issue 0
February 2017

महादेवी जी की काव्य वेदना एवं विरह-साधना

आरती

कृश्णा कालोनी,

नजदीक गर्ल्ज राजकीय उच्च विद्यालय,

जीन्द

''विश्व जीवन में अपने जीवन को, विश्व वेदना में अपनी वेदना को, इस प्रकार मिल देना जिस प्रकार एक जल बिन्दू समुन्द्र में मिल जाता है, कवि का मोक्ष है।''

-महादेवी जी

प्रसंगः- महादेवी जी के व्यक्तित्व में करूणा भावना की वृत्ति जन्मजात है। बाल्यकाल में ही छोटे-छोटे पौधों और पशु-पक्षियों तक के दुःख की कल्पना-मात्र से उनका हृदय द्रवित हो जाया करता था - जो उनकी अतिशय करूणा का सूचक है। आगे चलकर बौद्ध साहित्य के अनुशीलन से उनकी यह करूण भावना अपेक्षाकृत सूक्ष्म, एवं संतुलित हो गई।

मुख्य अंशः- दुख, करूणा, संवेदना, व्याकुलता।

परिचयः- बौद्ध दर्शन के अनुसार दुःख इस जगत् का अनिवार्य तत्त्व हैं - अतः दुःख, चाहे वह अपना हो या पराया, ग्रस्त होना अज्ञान का सूचक है। यही कारण है कि उनकी प्रारम्भिक रचनाओं में करूणा का स्वर अधिक आर्द्र है जो क्रमशः परवर्ती रचनाओं में शुष्क एवं शान्त निर्वेद में परिणत हो गया है। इस प्रकार कवियत्री क्रमशः करूणा से दुख और निर्वेद की ओर अग्रसर हो जाती हैं। जिसके परिणामस्वरूप वह स्वयं को और दूसरों को अधिक से अधिक दुःख सहन करने की प्रेरणा देती है।

अतः महादेवी जी काव्य वेदना एवं विरह-साधना का उल्लेख क्रमशः इस प्रकार किया जा सकता है।

महादेवी जी काव्य वेदना का प्रमुख स्वरः-

महादेवी जी के काव्य में अभिव्यक्ति की प्रयोगशीलता और अनुभूति की तीव्रता है। उनकी वन्दना में करूणा और कविता में वेदना का आनन्द तथा सौन्दर्य है। वे दुःख को ही जीवन का प्रेरक तत्त्व मानती है। वेदना उन्हें सदा मधुर या प्रिय है, करुणा से उनका हृदय सदा उधीप्त रहता है और दुःख को वे जानबूझ कर अपनाये हुए है। इस प्रकार ये तीनों भाव क्रमशः प्रणय, सहानुभूति एवं विरक्ति के विकसित रूप है जो उनके काव्य में समानान्तर रूप में प्रवाहित होते हैं। अतः कवयित्री की काव्य वेदना का क्रम इस प्रकार है।

(क) ' नीहार '

(ख) 'रश्मि'

(ग) 'नीरजा'

(घ) 'सांध्यगीत'

साहित्य संहिता
Available at http://www.sahityasamhita.org/
ISSN- 2454-2695
Volume 03 Issue 0
February 2017

(ड) 'दीप शिखा'

(क) 'नीहार' :-

'नीहार' का अर्थ है 'हिमकण' दूसरे शब्दों में कोमल अनुभूतियाँ जो जीवन के प्रभात में मानस पर बिछ जाती है। नीहार का पहला गीत उनकी साधना का उपक्रम और उपसंहार दोनों है। परन्तु उपसंहार के पहले उनकी वेदना कल्पनाशील हो उठती है। मन वेदना की गहराइयों में डूबने को व्याकुल हो उठता है। वे अपने मानस के निर्मम सूनेपन को मूर्तरूप देती हुई कहती है।

'आंखों की नीरव भिक्षा में
आंसू के मिटते दागों में,
ओठों की हंसती पीड़ा में,
आहों के बिखरे त्यागों में,
कन-कन में बिखरा है निर्मम,
मेरे मानस का सूनापन।' [1]

महादेवी जी वेदना के मूक साम्राज्य में अपना करूण गान सुनाना चाहती हैं। उन्हें विश्वास है कि अनन्त पथ पर आंसुओं से वे जो कुछ लिख रही हैं उसे रात के ओस बिन्दु धो नहीं सकते। उनकी आंखें तारों में प्रतिबिम्बित होकर मुसकरायेंगी। 'नीहार' में वेदना उन्हें मधु मदिरा से भी अधिक चेतना शून्य बना दिया है।

'कन कन में बिखरा है निर्मम?
मेरे मानस का सूनापन?' [2]

महादेवी जी 'आकाश की व्यथा' बादलों का अवसाद और रात्रि का नीरव राग- सब में एक ही वेदना देखती हैं और इसीलिए नीरव वेदना में अपनी वेदना मिला देती है। वेदना इसके लिए प्रिय से साक्षात्कार का माध्यम है और कभी न समाप्त होने वाली प्राणों की क्रीड़ा है जिसका उद्देश्य प्रिय को ढूंढना नहीं, वरन् प्रिय को अपने में ढूंढना है।

'तुमको पीड़ा में ढूंढा,
तुम में ढूढूंगी पीड़ा? [3]

(ख) 'रश्मि' :-

'रश्मि' महादेवी जी की काव्य वेदना का दूसरा चरण है, इसमें भी 'नीहार' की तरह अतीत स्मृतियों की अभिव्यक्ति है। उन्होंने रश्मि काव्य के माध्यम से अज्ञात पर आरोप लगाया हैं कि प्रिय को मुझे पीड़ा पहुंचाने में आनन्द आता है। यही कारण है कि प्रिय ने अपने अस्तित्व को स्थिरता प्रदान करने के लिए आंसुओं को प्रसाद से निर्मित कर लिया है। -

साहित्य संहिता

Available at http://www.sahityasamhita.org/

ISSN- 2454-2695
Volume 03 Issue 0
February 2017

'रच दी उसने यह' धवल सौध
ले साधों की रज नयन - नीर' [4]

(ग) नीरजा :-

'नीरजा' वेदना की लोकात्मक परिणति है। वेदना पर आरोप लगाती हुई महादेवी जी कहती हैं कि ये आंसू अन्तर हदय की अभिव्यक्ति हैं जो अपना परिचय देने के लिए मूर्त्तरूप में ढुलकते हैं। वस्तुतः वेदना का मूर्त्तरूप ही आंसुओं में दिखाई देता है। यह व्यक्त संसार भी इस 'वेदना की आकर्षित और प्रभावित करने में असमर्थ हैं।

(घ) सांध्यगीत :-

संध्यगीत में महादेवी जी की अभिव्यक्ति का स्वर वैयक्तिक सुख-दुःख तक ही सीमित नहीं रहा, वरन् उस सीमा को पार कर दुःख के सुखमय रूप का स्वर अनुगुंजित है। उन्होंने कहा भी है - 'नीरजा और साध्यगीत मेरी उस मानसिक स्थिति को व्यक्त कर सकेंगे, जिसमें अनायास ही मेरा हृदय सुख- दुःख में सामान्जस्य का अनुभव करने लगा।'

नभ पर दुःख की छाया नीली,
तारों की पलकें हैं गीली,
रोते हुए पर मेघ
आह रूथें फिरता है बात री।' [5]

(ड़) 'दीप शिखा' :-

महादेवी जी करूणा की साक्षात् संदेश वाहिका बन चुकी हैं। उनकी यह करूणा अपने आप में इसलिए अभिनव है; क्योंकि वे अनुराग से आप्लुत है। 'वेदना' को विरासत में पाकर उनकी वह मधुर हंसी कल्पना मधुर सूक्तियों में परिणत हो गई है। उनकी अनुभूतियां आकाश छू सके। इसलिए किरण-रथ मांगती है। इसे धरती और आकाश को जोडने के लिए वे वेदना को समर्थ पाती है। वे कहती है :-

'इन आंखों के रस से गीली?
रज भी है दिव से गर्वीली?' [6]

महादेवी जी ने दीप शिखा काव्य साधना के माध्यम से आशा-निराशा, विरह-वेदना, रहस्यवाद तथा रहस्यमय जीवन की समूची अनुभूतियों को एक ही भाव में दिखाया है।

साहित्य संहिता

Available at http://www.sahityasamhita.org/

ISSN- 2454-2695
Volume 03 Issue 0
February 2017

छाहं में 'उसकी गये आ
शूल फूल समीप,
ज्वाल का मोती संभाले,
मोम की यह सीप,
सृजन के शत दीप थामे प्रलय दीपाधार। [7]

महादेवी जी की विरह-साधना :-

महादेवी जी का अलौकिक प्रणय मिलन की कहानी से आरम्भ होता है किन्तु वह प्रारम्भिक मिलन इतना क्षणिक था कि वह सदा के लिए विरह में परिणत हो गया। उनकी विरह वेदना मानवीय चेतना के उच्चतम शिखर से फूटकर बहने वाली आध्यात्मिक गंगा है जो अलौकिक भावनाओं की शत-शत लहरियों से विश्व के सत प्राणों को परि-प्लावित करती हुई चिर शान्त अनन्त सागर की ओर बराबर प्रवाहित है। उनकी वेदना शुद्ध लौकिक न होकर आध्यात्मिक है। इन्हें सुख की अपेक्षा दुःख अधिक प्रिय है। इनके विरह में अत्याधिक संयम और त्याग है। वे दूसरों के हित की प्रबल आकांशा करती है। विरह-वेदना से पीड़ित होकर मिलन के सुखद क्षणों की याद करती हुई वह कहती है -

किस जीवन की मीठी याद
लुटाता हो मतवाला प्रात,
कली अलसाई आंखे खोल
सुनाती हो सपने की बात। [8]

निष्कर्ष :-

उपर्युक्त उद्धरणों से यह भली-भाँति स्पष्ट हो जाता है कि महादेवी जी के काव्य का मूलभाव या स्थायीभाव जहाँ अलौकिक प्रणय एवं रहस्यानुभाव है, वहाँ उसके सहचारी-संचारी नहीं, करूणा, निर्वेद और दुःख है। प्रारम्भिक करूणा ही अन्त में सुख के प्रति निर्वेद एवं दुःख के प्रति अनुराग में परिणत होकर वैराग्य में परिणत हो गयी है। अतः कह सकते हैं कि उनके काव्य में करुणा स्थायी भाव न होकर एक सबल संचारी के रूप में ही व्यक्त हुई है।

सन्दर्भ सूचि :-

1. (नीहार पृ0 सं0 12)
2. (नीहार पृ0 सं0 12)
3. (नीहार - पृ0 सं0 32)

ISSN- 2454-2695

Volume 03 Issue 0

February 2017

4. (रश्मि पृ0 सं0 127)
5. (सांध्यगीत पृ0 सं0 235)
6. (दीप शिखा – पृ0 सं0 103)
7. (दीप शिखा पृ0 सं0 74)
8. (नीहार पृ0 सं0 20)